५ भारत तथा अन्य देश

चलो दोहराई करेंगे !

पिछले अध्याय में हमने संयुक्त राष्ट्र इस अंतरराष्ट्रीय संगठन के विषय में तथा उसकी शांति और रक्षा की भूमिका के विषय में जानकारी प्राप्त की। शांति रक्षा के काम में भारत ने संयुक्त राष्ट्र की हमेशा सहायता की, यह भी हमने जाना। प्रस्तुत अध्याय में हम भारत और पड़ोसी राष्ट्रों के संबंधों की समीक्षा करेंगे। भारत से दूर स्थित कुछ देशों के भारत के साथ किस प्रकार के संबंध हैं, यह भी हमें समझना है।

चलो खोजें ...

* दक्षिण एशिया के मानचित्र के आधार पर भारत की सीमा रेखा से कौन-कौन से राष्ट्र जुड़े हैं यह जान लीजिए।
* भारत के अलावा किन राष्ट्रों की सीमा एक दूसरे से जुड़ी हैं वह ढूँढ़िए।

भारत और पड़ोसी राष्ट्र

भौगोलिक और राजनैतिक दृष्टि से एशिया महाद्वीप में भारत का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत

भारत तथा पड़ोसी देश

के पड़ोसी राष्ट्रों में अफगानिस्तान, पाकिस्तान, श्रीलंका, बांगलादेश, म्यानमार, नेपाल, भूटान, चीन तथा मालदीव का समावेश होता है। भारत की विदेश नीति में समानता, परस्पर आदर भाव जैसे मूल्यों को महत्त्व प्राप्त है। इन्हीं मूल्यों का अनुसरण करते हुए भारत ने पड़ोसी राष्ट्रों से संबंध स्थापित किए हैं। भारतीय उप महाद्वीप में भारत विस्तार में सबसे बड़ा देश है। साथ ही; आर्थिक और तकनीकी ज्ञान की दृष्टि से भी भारत अधिक विकसित है। अतः दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में भारत का प्रभाव रहना स्वाभाविक है।

भारत और पाकिस्तान

वर्ष १९४७ में भारत का विभाजन हुआ और भारत और पाकिस्तान इन दो स्वतंत्र देशों का निर्माण हुआ।

भारत-पाकिस्तान : भारत-पाकिस्तान देशों के संबंधों पर तीन समस्याओं का प्रभाव है। (१) दोनों राष्ट्रों के वैश्विक दृष्टिकोण में अंतर (२) कश्मीर समस्या (३) परमाणु शस्त्र संबंधी संघर्ष।

भारत और पाकिस्तान का विश्व की ओर देखने का दृष्टिकोण भिन्न है। भारतीय वैश्विक दृष्टिकोण के अनुसार भारत ने शीतयुद्धकालीन सैनिक संगठनों का विरोध किया और भारत-पाकिस्तान संघर्ष द्विपक्षीय अर्थात आपस में सुलझाने का प्रयत्न किया। वर्ष १९७२ में हुआ 'शिमला समझौता' इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित था। इसके विपरीत पाकिस्तान ने इस्लामी जगत से और चीन से संबंध बनाए रखने का प्रयत्न कर अमेरिकी सैन्य संगठन में प्रवेश किया।

भारत से संबंध प्रस्थापित करने में पाकिस्तान को कश्मीर सबसे बड़ा मुद्दा लगता है। कश्मीर के मुद्दे पर भारत-पाकिस्तान के बीच पहला युद्ध वर्ष १९६५ में हुआ। दोनों देशों के बीच के विवाद को सुलझाने के लिए वर्ष १९६६ में 'ताश्कंद समझौता' हुआ; पर उससे कुछ साध्य नहीं हुआ। यद्यपि वर्ष १९७१ में हुआ युद्ध बांगलादेश की निर्मिति को लेकर हुआ था तथापि कश्मीर समस्या भी उसका एक कारण था। वर्ष १९७२ के शिमला समझौते के अंतर्गत भारत और पाकिस्तान के बीच आपसी लेन-देन के लिए एक नया प्रारूप तैयार किया। वर्ष १९९९ में कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तान द्वारा की गई घुसपैठ के कारण भारत और पाकिस्तान में पुनः संघर्ष निर्माण हुआ। आज भी दोनों देशों के संघर्ष का कारण कश्मीर है। संघर्ष का स्वरूप तो बदल गया है और संघर्ष के इस नए स्वरूप का वर्णन आतंकवाद की समस्या के नाम से किया जाएगा।

भारत और पाकिस्तान ने वर्ष १९९८ में परमाणु परीक्षण किए जिसके कारण इस क्षेत्र की शांति और सुरक्षा के लिए नई चिंता उत्पन्न हुई है। इन दोनों देशों में परमाणु संघर्ष न हो; ऐसा अनेक राष्ट्रों को लगता है। भारत-पाकिस्तान संबंधों में और एक समस्या अर्थात सर क्रीक क्षेत्र में सीमा संबंधी विवाद को लेकर है।

दोनों देशों ने आपसी वार्तालाप के प्रयत्न किए हैं परंतु पाकिस्तान जिस प्रकार से भारत के विरुद्ध आतंकवाद को समर्थन दे रहा है और आतंकवादी गतिविधियाँ करवा रहा है; उसे देखते हुए वार्तालाप के सारे प्रयत्न विफल हो रहे हैं।

भारत-चीन : भारत और चीन का संघर्ष दो समस्याओं से संबंधित है। (१) सीमा विवाद और (२) तिब्बत का दर्जा। भारत और चीन में जो सीमा विवाद है वह अक्साई चीन और मैकमोहन रेखा क्षेत्रों से संबंधित है। चीन का दावा है कि अक्साई चीन और मैकमोहन रेखा के दक्षिण की ओर का प्रदेश (अरुणाचल प्रदेश) चीन का भूप्रदेश है। मैकमोहन रेखा अंतरराष्ट्रीय सीमारेखा है; यह चीन मान्य नहीं करता। यह सीमा विवाद बातचीत से हल हो जाए; इसके लिए भारत ने अनेक बार प्रयत्न किए परंतु इसमें सफलता नहीं मिली। वर्ष १९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण किया।

पारंपरिक दृष्टि से तिब्बत एक स्वायत्त क्षेत्र था। परंतु चीन द्‌वारा उस प्रदेश में लगातार अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाते रहने से तिब्बत के दलाई लामा ने भारत में राजाश्रय लिया। यही मुद्‌दा दोनों देशों के बीच विवाद के लिए कारण बना है।

चीन और पाकिस्तान के बीच मित्रता, चीन द्‌वारा पाकिस्तान को की जाने वाली शस्त्रों की आपूर्ति और प्रक्षेपणास्त्र तथा परमाणु हथियारों का तकनीकी ज्ञान के कारण भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बढ़ता ही जा रहा है। अतः पाकिस्तान तथा चीन की मित्रता तथा भारत के अन्य पड़ोसी राष्ट्रों के बीच चीन का बढ़ता प्रभाव भारत के लिए चिंता का विषय है। ऐसा होते हुए भी भारत ने चीन से संबंध सुधारने के हमेशा प्रयास किए हैं। इन दोनों देशों के बीच सीमा विवाद को चर्चा के माध्यम से सुलझाने के लिए संयुक्त कार्यकारी दल की स्थापना की गई है। चीन और भारत दोनों के आर्थिक विकास की गति बढ़ने के बाद दोनों के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत होना आरंभ हुए। दोनों के आर्थिक और व्यापारिक संबंधों में सुधार होने से रूस, चीन और भारत के बीच बार-बार चर्चा होने से धीरे-धीरे भारत-चीन संबंधों में सुधार हो रहा है। यद्‌यपि उनका सीमा विवाद हल नहीं हुआ है तथापि वह थोड़ा पिछड़ गया है। और अन्य क्षेत्र के संबंधों को भी महत्त्व प्राप्त हुआ है।

भारत और अन्य पड़ोसी राष्ट्र

अफगानिस्तान : अफगानिस्तान में राजनैतिक अस्थिरता बड़ी मात्रा में है। वहाँ तालिबान नामक आतंकवादी संगठन का वर्चस्व होना इसके लिए कारण है। अफगानिस्तान में शांति, सुरक्षा और स्थिरता लाना, वहाँ चल रही हिंसा की रोकथाम करना, लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना करने में सहायता करने के लिए भारत ने अफगानिस्तान की सहायता की है। इसी तरह युद्‌ध व्यवस्था के कारण नष्ट हुई परिवहन सुविधा का निर्माण करना, सड़कों का निर्माण करना, विज्ञान और तकनीकी ज्ञान क्षेत्र में सहयोग, विद्‌यालय, स्वास्थ्य सुविधा, सिंचाई परियोजना का निर्माण करना जैसे सभी क्षेत्रों में भारत अफगानिस्तान की सहायता कर रहा है।

बांगलादेश : वर्तमान बांगलादेश अर्थात पहले का पूर्वी पाकिस्तान। पाकिस्तान के निर्माण के समय पाकिस्तान का विभाजन पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान के रूप में हुआ था। पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्व पाकिस्तान में भाषाई अंतर था। इसी प्रकार अन्य राजनैतिक समस्याएँ भी थी। इसी कारण बांगलादेश मुक्ति आंदोलन का उदय हुआ। बांगलादेश को पाकिस्तान के वर्चस्व से मुक्त करने में इस आंदोलन ने अगुवाई की। बांगलादेश मुक्ति संग्राम में भारत ने बांगलादेशियों की सहायता की थी। वर्ष १९७१ में बांगलादेश का निर्माण हुआ। भारत और बांगलादेश के बीच पानी के बँटवारे के संबंध में और सीमारेखा के संबंध में कुछ समझौते हुए। फलतः उनके बीच चल रहा संघर्ष समाप्त होकर उनमें व्यापारिक संबंध बढ़ना आरंभ हो चुका है।

श्रीलंका : अपने पड़ोसी राष्ट्र श्रीलंका के साथ भारत के मैत्रीपूर्ण संबंध हैं। श्रीलंका में रहने वाले तमिलों और श्रीलंका सरकार के बीच चले संघर्ष के कारण वर्ष १९८५ के बाद श्रीलंका में राजनैतिक अस्थिरता निर्माण हो गई थी। उस समय श्रीलंका सरकार की सहायता के लिए भारत ने शांति सेना भेजी थी। सागरी क्षेत्र में सुरक्षा की दृष्टि से श्रीलंका के साथ मित्रता के संबंध महत्त्वपूर्ण हैं।

नेपाल : नेपाल और भूटान चारों ओर से पर्वतीय भूभाग से घिरे हुए देश हैं। उनकी सीमाएँ भारत और चीन से जुड़ी हैं। भारत और नेपाल के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों की नींव वर्ष १९५० में हुए भारत-नेपाल मित्रता समझौते द्‌वारा रखी गई। इस समझौते से नेपाल के नागरिकों को भारत में आसानी से न केवल प्रवेश ही अपितु सरकारी नौकरी और उद्‌योग करने की अनुज्ञप्ति (लाइसेंस) भी मिल गई है। नेपाल में राजतंत्र

था। वर्ष १९९० में नेपाल ने लोकतंत्र की दिशा में कदम बढ़ाया। आर्थिक प्रगति, बुनियादी सुविधाएँ, अनाज संबंधी आवश्यकता, व्यापार तथा ऊर्जा के किए नेपाल भारत पर निर्भर है। नेपाल में वर्ष २०१५ में आए भूकंप के समय भारत ने नेपाल की सहायता की थी।

भूटान : भूटान की सुरक्षा की जिम्मेदारी भारत पर है। भूटान में पानी का प्रचंड स्त्रोत है। इस पानी का उपयोग कर बड़ी मात्रा में बिजली निर्माण करने की परियोजना में भारत ने सहयोग दिया है।

म्यानमार : म्यानमार भारत के पूर्व की ओर स्थित दक्षिण-पूर्वी एशियाई राष्ट्रों को भारत से जोड़ने वाला प्रवेश द्वार है। इस भाग में विकसित हो रहे रेल मार्ग और राजमार्ग के कारण दक्षिण एशिया, मध्य एशिया और दक्षिण-पूर्वी एशिया एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँगे। इससे इस प्रदेश का व्यापार तथा आर्थिक लेन-देन बढ़ेगा। म्यानमार से भारत प्राकृतिक वायु की आयात कर सकता है।

क्या आप जानते हो?

म्यानमार और आंग सी क्यू : म्यानमार में सैनिक शासन के विरुद्ध दीर्घकाल लड़कर लोकतंत्र स्थापित करने का श्रेय आंग सी क्यू को दिया जाता है। शांति के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

मालदीव : आरंभिक काल से ही भारत और मालदीव के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं। भारत के दक्षिण में स्थित यह राष्ट्र अनेक कारणों से भारत पर निर्भर है। वर्ष १९८१ से इन दो राष्ट्रों ने व्यापारी संबंध स्थापित किए हैं। बुनियादी क्षेत्रों का विकास, स्वास्थ्य, यातायात जैसे क्षेत्रों में भारत ने मालदीव की बड़ी मात्रा में आर्थिक सहायता की है। वर्ष २००६ के बाद उनमें रक्षा क्षेत्र में भी सहयोग की शुरुआत हुई है। भारत ने मालदीव को सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने के लिए सहायता देना प्रारंभ किया है। अंतरिक्ष सहयोग, ऐतिहासिक वस्तुओं का संरक्षण, पर्यटन जैसे क्षेत्रों में दोनों राष्ट्रों में समझौते हुए हैं। इसी प्रकार आतंकवाद जैसी समस्या से लड़ने के लिए भी परस्पर सहयोग करने का निश्चय किया है।

भारत तथा अमेरिका

भारत तथा अमेरिका लोकतांत्रिक व्यवस्था के दो प्रबल राष्ट्र हैं। अमेरिका आरंभ से ही भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार था। अनेक भारतीय

दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन – सार्क

सार्क दक्षिण एशियाई राष्ट्रों द्वारा वर्ष १९८५ में स्थापित किया गया प्रादेशिक संगठन है। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में आर्थिक सहयोग निर्माण करना तथा उसके माध्यम से संपूर्ण दक्षिण एशिया का विकास साध्य करना इस संगठन का उद्देश्य है। सार्क संगठन से तात्पर्य है सभी दक्षिण एशियाई देशों द्वारा एकत्रित होकर अपनी समान समस्याओं और समान हितों पर चर्चा करने हेतु बनाया गया मंच। दरिद्रता निर्मूलन, कृषि का विकास, तकनीकी ज्ञान की क्रांति ये दक्षिण एशियाई देशों के कुछ समान हितसंबंध हैं। दक्षिण एशियाई देशों को परस्पर व्यापार करना अधिक सरल हो इसलिए सार्क के मंच पर कुछ महत्त्वपूर्ण समझौते किए गए। उसके अनुसार संपूर्ण दक्षिण एशिया का एक मुक्त व्यापार क्षेत्र निर्माण करने का निश्चय किया गया है। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के समान विकास हेतु दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय जैसी संस्था और दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र का समझौता किया गया है।

* सार्क संगठन स्थापित करने के पीछे कौन-सा उद्देश्य है? * वर्तमान में सार्क के कितने सदस्य देश हैं? * दक्षिण एशियाई देशों के समान हितसंबंध कौन-से हैं?

शिक्षा और नौकरी हेतु अमेरिका जाते थे। वहाँ के इन अनिवासी भारतीयों के कारण अमेरिका और भारत में सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आर्थिक संबंध बढ़ते गए हैं। शीतयुद्ध के बाद भारत और अमेरिका में सुरक्षा संबंधी संबंध बड़ी मात्रा में बढ़े। भारत द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति स्वीकार करने के बाद धीरे-धीरे भारत की आर्थिक प्रगति की गति बढ़ने लगी। परिणामस्वरूप भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक संबंध अधिक दृढ हो गए।

वर्ष १९९८ में भारत द्वारा परमाणु परीक्षण करने के बाद कुछ समय तक भारत और अमेरिका के संबंधों में तनाव निर्माण हुआ था। इसके बाद संबंधों में सुधार हो इसके लिए भारत और अमेरिका के बीच बातचीत की अनेक बैठकें ली गईं। कई बार चर्चाएँ हुईं। इन चर्चाओं द्वारा अमेरिका को यह विश्वास हो गया कि भारत परमाणु हथियारों का दायित्व पूर्वक उपयोग करेगा। इसके बाद भारत और अमेरिका के संबंधों में आमूलाग्र परिवर्तन हुआ। वर्ष २००५ में हुआ सुरक्षा संबंधी सहयोग का समझौता और वर्ष २००८ में हुआ परमाणु सहयोग का समझौता भारत-अमेरिका के संबंधों के महत्त्वपूर्ण चरण हैं। विगत ५ वर्षों में भारत और अमेरिका के दरमियान सभी क्षेत्रों में सहयोग के संबंध निर्माण हुए हैं।

क्या आप जानते हैं?

वर्ष २००५ में भारत और अमेरिका के बीच नागरी परमाणु सहयोग समझौते को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और अमेरिका के अध्यक्ष जॉर्ज बुश ने मान्यता दी। वर्ष २००८ में अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा आयोग ने इस समझौते को अनुमति दी। इस समझौते के कारण भारत को अन्य देशों से परमाणविक तकनीकी ज्ञान मिलना संभव हो गया है।

भारत और रूस

भारत और सोविएत रशिया और वर्तमान रूस के बीच प्रारंभ से ही मित्रता के संबंध थे। शीतयुद्ध के काल में वर्ष १९७१ में उनमें मित्रता का समझौता हुआ तथा उसमें से रक्षा संबंधी उसी प्रकार आर्थिक और तकनीकी वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा मिला। सोविएत रशिया ने भारत को बड़ी मात्रा में आर्थिक और सैन्य सहायता भी दी थी।

सोविएत रशिया का विघटन हो जाने पर भारत ने रूस के साथ संबंध बढ़ाने का प्रयत्न किया। आरंभ में रूस की राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं के कारण संबंधों में बहुत अधिक सुधार नहीं हुआ। वर्ष १९९६ के बाद भारत और रूस के बीच संबंध धीरे-धीरे सुधरने लगे। सैन्य सामग्री का उत्पादन, खनिज तेल उत्पाद जैसे क्षेत्रों में भारत और रूस ने संयुक्त परियोजनाएँ शुरु कीं।

भारत और यूरोपीय राष्ट्र

यूरोपीय राष्ट्रों और भारत के बीच व्यापारिक संबंध हैं। प्रमुख रूप से जर्मनी और फ्रांस भारत में प्रौद्योगिकी क्षेत्र में बड़ी मात्रा में निवेश करते हैं। इसके अतिरिक्त भारत को यूरोपीय राष्ट्रों की ओर से शस्त्रास्त्र निर्मिति का तकनीकी ज्ञान भी मिलता है। अभियांत्रिकी और सूचना-तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में भारत बड़ा निर्यात करने वाला देश है। दोनों का ही प्रमुख उद्देश्य खुले व्यापार पर बल देना है। इसके अलावा भारत और यूरोपीय राष्ट्र अन्य अनेक बातों में सहयोग की भूमिका निभाते हैं। जलवायु परिवर्तन, स्वच्छ ऊर्जा, सुरक्षा उत्पादन, साइबर सुरक्षा, अनुसंधान, रेल प्रबंधन, आपात प्रबंधन, हवाई सुरक्षा तथा आतंकवाद इन संदर्भों में अनेक समझौते किए गए हैं। भारत के विकास की दृष्टि से ये सहयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

आओ, खोजें...

* यूरोपीय संघ की स्थापना कब हुई?
* यूरोपीय बाजार, यूरोपीय मुद्रा इनके विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

भारत और अफ्रीका महाद्वीप

भारत और अफ्रीका महाद्वीप के सहयोग के लिए भारत ने सप्रयोजन कदम उठाए हैं। अफ्रीका के साथ निकट के संबंध होना दोनों की दृष्टि से लाभदायी है। अफ्रीका के अनेक देश तीव्र गति से आर्थिक उन्नति कर रहे हैं। भारत ने अफ्रीका में युवा वर्ग का सर्वांगीण विकास होने के लिए सहायता करने की तैयारी दिखाई है, शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य, विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान, कृषि, पर्यटन जैसे सभी क्षेत्रों में विकास होने के लिए भारत ने आर्थिक सहायता करने की, अनुदान देने की तैयारी दिखाई है; तो भारत की ऊर्जा की आवश्यकता अफ्रीका के ऊर्जा संपन्न देश - इजिप्त, नाइजीरिया, अंगोला, सूडान पूरी कर सकते हैं। अफ्रीका के साथ व्यापार बढ़ाने के लिए भारत प्रयत्नशील है।

वर्ष २०१५ में संपन्न हुई भारत और अफ्रीका शिखर परिषद में अफ्रीका के सभी ५४ राष्ट्रों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस परिषद में अनेक वैश्विक समस्याओं पर चर्चा की गई। जैसे जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, समुद्री तस्करी आदि।

भारत तथा इंडो-पैसिफिक

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में प्रमुख रूप से जापान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दक्षिण-पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का समावेश था। इन सभी राष्ट्रों से भारत के घनिष्ठ आर्थिक और व्यापारी संबंध हैं। वहाँ की अनेक कंपनियों ने भारत में निवेश किया है। भारत और ऑस्ट्रेलिया इनमें सामाजिक सुरक्षा, अपराधियों का प्रत्यार्पण, नशीले पदार्थों की तस्करी विरोधी अभियान, पर्यटन, कला-संस्कृति इन क्षेत्रों में विविध अनुबंध किए गए हैं; तो बुनियादी सुविधा, आर्थिक सहयोग, संरक्षण, सूचना प्रोद्योगिकी, परमाणु ऊर्जा और रेल जैसे अनेक क्षेत्रों के विकास के लिए जापान भारत को सहयोग करता है। जापान ने भारत को सागरी क्षेत्र के विकास और सुरक्षा के लिए आर्थिक और तकनीकी सहायता देना स्वीकार किया है। दोनों देशों के तटरक्षक दल और नौसेना में संयुक्त अभ्यास होता है।

भारत तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया

आरंभ से ही भारत का इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, फिलीपीन्स, थाइलैंड, म्यानमार, विएतनाम, लाओस, कंबोडिया तथा ब्रुनेई जैसे दक्षिण-पूर्वी एशिया के राष्ट्रों से सौहार्दपूर्ण संबंध हैं। वर्ष १९९१ के बाद भारत ने अपनी आर्थिक नीति में परिवर्तन कर आर्थिक उदारीकरण को स्वीकार किया। उसके बाद दक्षिण-पूर्वी एशियाई राष्ट्रों के साथ चल रहे व्यापारी संबंधों में अधिक वृद्धि हुई है। दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्रों से व्यापार बढ़ाने की यह नीति 'पूर्व की ओर देखो' (Look East) नाम से पहचानी जाती है। वर्ष २०१४ के बाद यह नीति अधिक सक्रिय की गई। वर्तमान में यह नीति 'कृति करें' (Act East) नाम से पहचानी जाती है।

भारत और पश्चिम एशिया : पश्चिम एशिया के देश प्रमुख रूप से खनिज तेल तथा प्राकृतिक गैस की आपूर्ति करने वाले देश हैं। भारत के पश्चिम एशियाई राष्ट्रों से पारंपरिक संबंध हैं। भारत पश्चिम एशियाई राष्ट्रों से प्राप्त होने वाले खनिज तेल पर निर्भर है। ईरान, इराक, बहरीन, कुवैत, सउदी अरब, संयुक्त अरब अमिरात इन राष्ट्रों की ओर से भारत खनिज तेल का आयात करता है; तो कृषि के लिए हमें आधुनिक तकनीकी ज्ञान इजराइल से मिलता है। उसी प्रकार रक्षा संबंधी आधुनिक सामग्री भी इजराइल से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त नौकरी-व्यवसाय के लिए अनेक भारतीय वहाँ रहते हैं। अपनी आर्थिक व्यवस्था में उनका भी योगदान महत्त्वपूर्ण है।

सभी राष्ट्रों से मित्रतापूर्ण संबंध रखना और अपने साथ अन्य राष्ट्रों का भी विकास हो इसके लिए एक-दूसरे की सहायता करना भारत की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य है।

हमने यहाँ भारत और विश्व के महत्त्वपूर्ण देशों के संबंधों की संक्षेप में समीक्षा की। अगले अध्याय में हम कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय अथवा वैश्विक समस्याओं का अध्ययन करेंगे।

स्वाध्याय

१. दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए।

(१) वह देश जिसकी भारत के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा खुली है-

(अ) पाकिस्तान (ब) बांगलादेश

(क) नेपाल (ड) म्यानमार

(२) भारत के साथ तनावपूर्ण संबंध रखने वाले देश-

(अ) पाकिस्तान तथा चीन

(ब) नेपाल तथा भूटान

(क) म्यानमार तथा मालदीव

(ड) अफगानिस्तान तथा अमेरिका

(३) भारत और पाकिस्तान के संबंधों पर प्रभाव डालने वाले मुद्दे

(अ) दोनों राष्ट्रों के वैश्विक दृष्टिकोण में अंतर

(ब) कश्मीर समस्या

(क) परमाणु संबंधी संघर्ष

(ड) उपर्युक्त सभी समस्याएँ

२. निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य सकारण स्पष्ट कीजिए।

(१) दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में भारत का स्थान महत्त्वपूर्ण है।

(२) भारत -चीन संबंध मित्रतापूर्ण हैं।

(३) श्रीलंका सरकार की सहायता के लिए भारत ने शांति सेना भेजी।

३. दी गई सूचना के अनुसार कृति पूर्ण कीजिए।

१. निम्नलिखित तालिका पूर्ण कीजिए।

क्र.	समझौते / लेन-देन	संबंधित देश
१.	.....	भारत-पाकिस्तान
२.	मैकमोहन रेखा	.....
३.	.....	भारत-बांगलादेश
४.	प्राकृतिक गैस का आयात	.....
५.	.....	भारत-अमेरिका
६.	बुनियादी विकास, परिवहन स्वास्थ्य	.....
७.	.....	भारत-अफ्रीका

४. निम्न अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

(१) शिमला समझौता

(२) भारत-नेपाल मित्रता समझौता

(३) मैकमोहन रेखा

(४) भारत-अफगानिस्तान संबंध

५. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

(१) भारत-अमेरिका के बीच सहयोग के संबंध निर्माण होने की पार्श्वभूमि स्पष्ट कीजिए।

(२) पड़ोसी राष्ट्र में लोकतंत्र प्रस्थापित होने के लिए भारत द्वारा किए गए प्रयत्नों के संबंध में उदाहरण सहित जानकारी लिखिए।

(३) दक्षिण एशियाई प्रादेशिक सहयोग संगठन कौन-से कार्य करता है?

उपक्रम

(१) राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री के विदेश यात्रा की जानकारी प्राप्त कीजिए।

(२) विविध देशों के 'यूथ एक्सचेंज' कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त कीजिए।

7IWPZH